सूरदास के काव्य में वियोग बिप्रलम्भ तथा वात्सालय वर्णन

ज्योति कुमारी,
शोधार्थी
Jyotikumari30011993@gmail.com

हिन्दी साहित्य में कृष्णभक्ति की सतत धारा में प्रगति करने वालो कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोच्य है तथा उन्हें उदव का अवतार माना जाता है । चोरसी वेष्णवन की वार्ता के अनुसार वे दिल्ली के निकट सीही के सारस्वत ब्राहमण परिवार में उत्पन्न हुए थे । इनका जन्म 1448 ई0 तथा निधन 1583ई0 में माना जाता है । इन्होने बल्लभचार्य से शिक्षा ग्रहण किया । बल्लभचार्य के शिष्य बनने के बारे में चन्द्र सरोवर के समीम पारसोली गांव में रहने लगे । इनकी मृत्यु पर बिठ्ठल दास जी ने शोकाकुल होकर कहा था :–

''पुष्टि मार्ग में जहाज जात है। सो जागे कछु लेने होय सो लउ''

इनकी शिक्षा आदि के बारे में कहीं कोई उल्लेख नहीं है ।

सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' कृष्ण काव्य का महत्वपूर्ण गेय मुस्तक गफ ग्रन्थ है । सूरसागर की क्या श्रीमद्भागवत पुराण के दशक स्कन्ध से ली गई है । इसमें कुल बाहर स्कन्ध है जिसमें कृष्ण जन्म से लेकर श्री कृष्ण के मथुरा जाने तक की कथा है । सूरसागर में कुष्ण का बाल जीवन दशक स्कन्ध के पूर्वार्द्व में है तथा कृष्ण की द्वारिका गमन को लेकर स्कन्ध के जीवनी दशक स्कन्ध के उत्तरदाई में वर्णित है ।

सूरसागर का भ्रमरगीत प्रंसग सर्वोपरि मर्मस्पर्शी अंश है इसमें गोविन्दों की कथन वक्ता का अत्यन्त मनोहारी चित्रण किया गया है । उद्वव–गोपी संवाद के माध्यम से निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन किया गया है ।

सूरसागर के प्रथम तथा नवम स्कन्ध में रामकथा से सम्बन्धित पर है । सूरसागर के प्रथम स्कन्ध में अधिकतर पर विनय पत्र से सम्बन्धित है । नवम स्कन्ध में 158 पनों में सम्पूर्ण रामकथा वर्णित है । ये पत्र साथ खण्डो में समायोजित है तथा इसमें राम के लोकरक्षक स्वरूप का चित्रण हुआ है । इसमें प्रवन्धात्मकता विद्यमान है ।

सूरदास वात्सल्य और श्रृंगार के कवि है विरब साहित्य में कोई भी कवि वात्सल्य के क्षेत्र से उनके समक्ष नही है । इसी कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सूरसागर' में 'स्त्री–चरित्र का विशाल काव्य' कहा है । 'साहित्य लहरी' नायिक भेद से सम्बन्धित श्रृंगार ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में स्तर के दृष्टीगत के पद संकलित है । जो काव्य सदियों में निबद्व होगें के कारण हुए है । 'साहित्य–लहरी' पर संकलित है । जो काव्य रूढ़ियों में निबद्व होने के कारण है । सूर सारावली से सूरदास की विषय–सूची कहा गया है और सूरदास के गेम पर मुक्तक है किन्तु उनमें प्रबंधात्कक्ता का रस है ।

विप्रलम्भ श्रृंगार की परिभाषा आचार्य भोज के शब्दों में ''जहॉ रति नामक भाव प्रकर्ष को प्राप्त हों, लेकिन अभिष्ट को ना पा सके'', वहॉ विप्रलम्भ श्रृंगार कहा जाता है।

आचार्य भानुदत्त के अनुसार –

''युवा व युवती की परस्पर मुदित पंचेन्द्रियों के पारस्परिक सम्बन्ध का आभाव अथवा अभिष्ट की अप्राप्ति वियोग श्रृंगार है'' ।

इन कथनो में अभिष्ट का अभिप्राय नामक एवम् नायिका से हैं । उक्त आचार्यो `न अभिष्ट की आप्राप्ति ही विप्रलम्भ वियोग श्रृंगार की निष्पति के लिये आवश्यक मानी है ।

विप्रलम्भ श्रृंगार के भेद

आचार्यो ने विप्रलम्भ श्रृंगार के चार प्रकार माने है जो निम्नलिखित हैः–

पूर्वराग – मिलन अथवा समागम से पूर्व हदय में वो अनाथ का भाव होता है उसे पूर्वराग कहा जाता है । पूर्वराग में विलोम भी कहते है ।

मान – प्रियापराध जनित कोप में मान कहते ह । इसके दो भेद होते है :

1. प्रणयमान
2. ईर्ष्या मान

1. दोनों के नायक–नायिका हदय में भरपूर प्रेम होने पर भी जन प्रिय–प्रिया एक दूसरे से क्रोधित कृपित हो तब प्रणयमान होता है ।
2. पति की अन्यनारी में आशक्ति देखने अनुमान करने या किसी को सुन लेने पर स्त्रीयों द्वारा किया गया मान ईर्ष्या मान कहलाता है ।

प्रवास – नायक–नायिका में से एक का प्रदेश होना प्रवास कहलाता है । ये प्रवास कार्यवंश, शापवंश अथा समवंश तीन कारणों से होता है । प्रवास वियोग में नायिका के शरीर और वस्त्र में मलिनता, सिर में एक साधारण चोटी रोदन, भूमि इत्यादि होते है।

करूण विप्रलम्भ : नायक–नायिका में से किसी को मर जाने पर दूसरा जो दुखी होता है। उसे करूण विप्रलम्भ कहते है लेकिन करूण विप्रंलम्भ तभी माना जायेगा । जब परलोक–गत व्यक्ति के इसी जन्म में इसी देह में पुनः मिलने की आशा बनी रहे ।

सूरदास के काव्य में पूर्वराग

सूर काव्य में पर्वाराग का वर्णन विस्तार से हुआ है । पूर्वाराग को दो प्रमुख कारण माने गये है ।

साक्षात दर्शन

साक्षात दर्शन का मिलन कुछ ही क्षणों के लिये होता है । किन्तु वह मन में जो व्यथा जाग्रत कर पाता है । वह निरंतर मन को कचोटती रहती है । ऐसी ही दशा सूरदास की गोपी की भी है । एक दिन अचानक उसे कृष्ण के दर्शन हो गये तभी से वह इतनी मुग्ध हुई कि अपनी सुदबृद्व भूल गयी । उसकी इस विरहदशा का चित्र कवि सूर ने निम्नलिखित रूप में किया हैः–

''नैन भए बस मोहन तै ।

ज्यौं कुरंग बस होतनाद, तरत नही ता मोहन तै ।।''

सूरदास के काव्य में मान

प्रेमभाव में अधिक उज्जवल व पुष्ट बनाये को मान का भी उतना ही योग होता है । जितना विप्रलम्भ श्रृंगार के अन्य भेदों का सूर ने दृष्ट और अनुभित कारणों पर आधारित मान लीलाओं का राधा के मान का वर्णन किया है । कृष्ण किसी अन्य रमणी के साथ रमण भ्रमण करना करके लोटे है । रामभर जागरण के कारण वे आंखों में नींद भरे हुए है । उनके अधर में चुम्बन के कारण नायिका की आंखों का काजल, पैरों में पड़कर रति विनय करने के कारण, भाल

मस्तक पर नायिका के पैरों का महावर लगा हुआ है । इन रति चिह्नों के साथ अन्य चिह्न भी विद्मान है । रति में ये सभी चिह्न दृष्ट है ।

"क्यों आए उणि भोर जहॉ

वाहे कौ इतनो सरमाने, रैनि रहे फिरि जाहू तहां"

सूरदास के काव्य में प्रवास

प्रवास विरह का आरम्भ कृष्ण के मथुरा गमन से प्रारम्भ होता है । श्री कृष्ण लौटे नहीं। अतः मदनगोपाल के बिना गोपियों के तन की सभी बातें बदल गई । बृज में पहले सायं काल में जो मनोहर दृश्य देखने में आया करता था वह अब बहार नही दिखायी पड़ता किन्तु मन से उसकी स्मृति नही जाती ।

आगे कवि ने भ्रमर गीत प्रसंग में गोपियों की विरह दशा के एक से एक अनूठे चित्रों की अवतारणा की है । जिसका लक्ष्य कर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है :–

"वियोग की जितनी अंतर दशाऐं हो सकती है । जिसमे ढगों से उन दशाओं का साहित्य में वर्णन हुआ है और सामान्यता : हो सकता है । वे सब उसके भीतर मौजूद है।"

गोपियाँ रात–दिन कृष्ण के ध्यान में ही डूबी रहती है । स्वप्न में भी उनके विषय में सोचती है । कभी–कभी कृष्ण के साथ उनका स्वप्न में मिलन भी हो जाता है । किन्तु जब आंखे खुल जाती ह तो उनका समग्र मनोहर स्वप्न खंडित हो जाता है और वे स्वय् को पुनः विभोग की उसी दारूण दशा में पाती है ।

"हमको सुपनेह में सोच ।

जा दिल ते विछुते नंदनंदनता

दिन तै यह पोय ।।"

पत्री का पान

प्रवासी प्रियतम के पत्र में पाकर वियोगी नायिका के मन में एक साथ ही अनेक भावों का उदित हो पाना अत्यन्त स्वाभाविक है । और मनोवैज्ञानिक है । सूरदास की वियोगी गोपियों को जब कृष्ण का पत्र मिलता है तो वे प्रेमावेश के कारण इतनी भाव विभोर हो जाती है कि कोई गोपी तो उसे पढ़ने लगती है । कोई उसे अपने नेत्रों पर रख लेती है कोई उसे हदय से लगा लेती है और कोइ आतुर होकर उद्व से पूछने लगती है कि क्या यह पत्र कृष्ण ने ही स्वम् विचार कर लिखा है ।

"पाली मधुवेन ते आई

अधौ हति के परम स्नेही

ताकै हाथ पछाई"

प्राकृति उद्दीपन

जो प्रकृति संयोगावस्था में आनन्द देने वाली होती है । वियोगावस्था में वही दुखमयी बन जाती है । प्रकृति के इस उद्दीपन रूप को विप्रलम्भ विभोग श्रृंगार के अन्तर्गत रीति आचार्यो के भांति वैश्णव आचार्यो ने भी इसे माना है । सूरदास ने गोपियों की विरह वेदना के उद्दित करने के लिए प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण प्रन्वुष्ता से किया है ।

वियोगी गोपियां जब अपनी विरह व्यथा में शांत करने के लिए कुंपो में जाती है। जिनमें वो कृष्ण के साथ अनेक प्रकार की आनन्दमयी कीडये किया करती थी तो उनकी व्यथा और भी बढ़ जाती है । उन्हें प्रतीत होता है कि संयोगवस्था में मित्र बनी रहन वाली कुंपे वियोगवस्था में चौटिल बन गई । शीतल लगने वाली लताएं विषम ज्वाला के कुंप बन गई । पवन, जल चंदन और चंद्रमा आदि उन्हें दाहक मालूम होते है ।

" बिनु गोपाल भई कुंजै तब वे लता लागत अति ।

शीतल जब भई विषम ज्वाला की पुजैं ।।"

सन्देश सम्प्रेषण

गोपियाँ बादलों को संदेश सम्प्रेषण के लिये श्री कृष्ण जी को पत्र देने के लिए कहती है ।

"हरि परदेश बहुत दिन लाट कारी जटा देखि

बादर की नैन–नारि भारे जाए ।

पा लागौ तुम्ह –तुम्ह , हरी बता कौन वेश ते पार ।।

वह चन्द्रमा द्वारा संदेश भेजती है ।

"दादी सुतजात हो बहि दैम द्वारका है

स्याम सुन्दर सकल भवन नरेसा ।।

वियोग दशाऐं

तैष्णत आचार्यो ने प्रवामधन्य विभोग की 10 दशाऐं मानी है । चिंता, जागरण, उडवेग, विलाप, मलिनता, प्रलाप, व्याधि, उन्माद, मोह, मृत्यु, । कवि सूरदास में इन सभी दशाओं का विस्तार से चित्रण किया है ।

चिता

मधुकर ! ये नैना पै हरि

निरावि निरावि भंग कमल नैन ने प्रेम मगन भ भरि ।

जागरण

हममैं जागत रैनि विहानी

कमल नमन जगजीवन की साखी गावत आप कहानी ।

उद्वेग

तुम्हारी प्रीति रिथौ दरबरि ।

दृष्टि धार धरि हिटजु पहिरो

धामल सब ब्रजनारि ।

मिलाप

सर्वो सुख लैन गए ब्रजनान

बिलपि चितवनि मधुवन, तन हम न गई, उहि साथ ।

मलिनता

अति मलीन तृपभानु कुमारी

हरिजन जल भीज्को, हरअथल, तिहि लालच न धुववति सारी ।

प्रलाप

सरित कर धनु लै चन्दहि भारि

जब तो पै क्हु तैन सिरैहे जब अति

जुर जहैं तनु जारि

काधि

चितवन हि मधुवन दिन जात

नैननि नींद परति नहिं सजनी

सुनि सुनि वातभि मान अकुलात

उन्माद

रहु रहु ते विहंग वनवासी

तेरे बोलत सजनी बाढ़ति सूपननि

सुनत नीदंहु नाशी

मोह

जबहि कहमो ये स्थान नहीं

पती मुरछि, धरमि ब्रजबाला

जो जहॅ रही सु ताही

मृत्यु

उधों कही सी पोति ग महियो

के हरि हममें आनि मिलावकु लै चलियौ साथ

सुर स्माम बिनु प्राब जाति हे ।

दोष सुर तुम्हाते साथ

इस प्रकार सूर का विरह वर्णन अत्यन्त व्यापक एवम् मार्मिक है उसके चित्रण की जितनी विधियाँ जितने रूप उसमें जितनी मानसिक दशाएं हो सकती है । उन सब का चित्रण कवि सूरदास ने किया है । महाकवि सूरदास ने श्री कृष्ण के बाल सौन्दर्य की झांकी तो काव्य में दिखाया ही है । साथ ही बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण भी सूर साहित्य में उपलब्ध होता है । बालक की चेष्टाऐं, माता का आशंकित हदय, पुत्र के प्रति वातसाल्य भाव के अनूठे एवं मर्मस्पर्शी वर्णन सूर काव्य में उपलब्ध होते है । उनकी इस विशेषता को लक्ष्य कर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है । ''बाल सौन्दर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है । उतनी अन्य किसी में नहीं वे अपनी बल आंखों से वात्सल्य का कोना–कोना झांक आए है ।

वात्सल्य का रसत्व संस्कृत के कतिपय आचार्यो ने वात्सल्य पक्ष निश्चय ही अधिक प्रबल है । वात्सल्य भाव मातृवृत्ति का मनोमय अनुभव है और मातृवृत्ति ही जीवन की अत्यन्त भौतिक वृत्ति है, अतः वात्सल्य के रसत्व का निषेध सम्भव नही है । न उसमें श्रृंगार आदि में अन्तमोल उचित है और न केवल भाव की कोटि तक ही उसमें मानना ठीक रहेगा।''

वात्सलय रस के अंग इस प्रकार हैः–

– स्थायी भाव – वत्सलता स्नेह

– आलम्बन वियोग – पुत्र आदि

– उद्दीपन वियोग – पुत्रादि की चेष्टाएँ, विद्या, सूरता, दया आदि ।

– अनुभव – अलिगन, अंग–स्पर्श, प्रेमपूर्वक देखना, रोमांच, आनन्द के अश्रु आदि ।

– संचारी भाव – आंशका, हर्ष, गर्व आदि

वात्सलय रस के क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है । अतः इसके दो भेद माने गये है । पहला संयोग वात्सल्य इसमें वियोग वात्सलय सूर के साथ अष्ठछाप के सभी कवियों ने कृष्णभक्ति के अन्य सम्प्रदाय के कवियों ने तो कवि तुलसीदास ने राम की शिशु लीलाओं के चित्रण में वात्सल्य रस के चित्र रतीये है ।

वात्सल्य रस के सम्राट कवि सूरदास है । अन्य कवियों द्वारा किया गया वात्सलय वर्णन अत्यन्त अलप तथा एंकागी है । उसका विस्तार न गहराई । न ही उन्होने वात्सल्य के सभी पक्षों को उजागर किया है । सूर का वात्सलय वर्णन व्यापक है । वह गहराई लिए हुए है । उसमें वात्सल्य जीवन के विविध पक्षों की झाँकीयाँ उन्होने न केवल बाल –चेष्टाओं का ही वर्णन किया है । अपितु वालमे की अन्त प्रकृति में भी पूरा प्रवेश किया है ।

सूर के वात्सलय वर्णन में जन्मोत्सव, मातृ हदय की झांकी कृष्ण क बाल रूप की झांकी, बाल चेष्टा के स्वाभाविक मनोहारी चित्र, बाल आक्रोश का चित्रण, बाल लीलाओं का चित्रण, बाल हर्ष का वर्णन और वियोग वात्सलय आदि के रूप को देख सकते है ।

वासुदेव अपने पुत्र की सुरक्षा के लिए चुपचाप यशोदा के पास छोड़ आते है । आलौकिक शिशु यशोदा की बगल में लौकिक शिशु के रूप को जो बिराजे । यशोदा में न तो उसकी सुरक्षा की चिन्ता थी न उनके ब्रहम रूप का ज्ञान था । अतः जगने पर जब उन्होने अपनी बगल में देखा तो उन्हे विशुद्व वात्सलय रस की अनुमति हुई ।

माता यशोदा अपने पुत्र का बड़ा ध्यान रखती है । कही उसकी नींद न खुल जाये। अभी–अभी तो सोया है । वह उसे पालने में झुलाते हुए सुला रही है :–

यसोदा हरि पालने झुलावे

हलरावें दुलरार मलहावै जोर सोइ कछु गावें ।

मेरे लाल को आउ निदत्किा काहे न आनि सुवावै।।

सूरदास ने यशोदा को मातृ हदय का जो सरल स्वभाविक और सर्वग्राही चित्र अंकित किया है वह अश्चर्यजनक है । उनकी अभिलाषा है कि मेरा लाल घुटनो के बल चलने लगे ।

''जसुमति मन अभिलाषा करै ।

कब मेरो लाल घुटुस्वनि रेगैं ।।

कब धरती पग द्वैक धरैं ।''

कृष्ण के बाल रूप की झांकी बालक कृष्ण अत्यन्त सुन्दर है । धूल से सने हुए बाल कृष्ण घुटनों के बल चलते है और मीठी–मीठी बोली बोलते है । माता यशोदा उनकी इस छवि पर न्योछावर हो रही है :–

''सोमित कर नवगीत लिए

घुटसन चलत रैनु तन मंडित, मुख दधि लोप किये''

बाल चेष्टाओं और उनकी अन्तः प्रकृति के अनेक चित्र खीचें है :–

''मैया कबहि बठैगी चोटी ?

कितनी बार मोहि दूध पिल्त भई, यह अराहूँ है छोटी''

बाल आक्रोश का चित्रण कृष्ण को बच्चें चिढ़ाते है । विशेषकर बलदाउ जी कहते है कि तू नन्द बाबा और यशोदा मां का पुत्र नही है । तुझे कोख मोल कृष्ण खीझ लिया है वीरू जाते है और अपने आक्रोश की अभिव्यक्ति माता यशोदा से इन शब्दों में करते है :–

''मैया मोहि दारू बहुत खिझायो ।

मेसो कहत मोल कौ लीनो तू जसुमति कब जायो ।।''

मैया उन्हें विश्वास दिलाती है कि मैं गोधन की सौगन्ध खाकर कहती है मैं तुम्हारी मॉ और तुम मेरे बेटे हो ।

बाल–लीलाओ का चित्रण बालक खेल–खेल में जीतकर दूसरों को चिढ़ाते है । छोटे–बड़े का भेद खेल में नहीं होता हे ।

''खेलन में को कामे गुजैया

हरि –हारे जीते श्रीदामा बरनस की कत करत तिभैया ।।

इस प्रसंग में कृष्ण द्वारा माखन चुराने का वर्णन भी सूरदास में किया है । गोपी उनकी शिकायत करने आती है । तो कृष्ण अपनी सफाई तर्क सहित देते है––

''मैया मैं नहि माखन खायो ।

ख्याल परे ये सखा जबै मिलि बखास मुख लपटायो ।।

बालहठ ग वर्णन बच्चों की जिद बेतुकी होती है । कृष्ण ने हट पकड़ लिया है कि मैं तो चन्द्र खिलौना लूंगा । अब यशोदा क्या करें । जैसे–तैसे उन्हें बहलाती है पर बात नही बन पाती । सूरदास जो कि कृष्ण की हठ का वर्णन इस प्रकार किया है :

''मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लौहों ।

जैहो लोटी अबै धरती पर तेरी गोद न ऐहो ।।

वियोग वात्सलय कवि सूरदास ने वहॉ संयोग वात्सलय के चित्रों की अवतारणा की है । वहॉ वियोग वात्सलय का भी मनोरक वर्णन किया है । गतिदमन के लिए जब कृष्ण यमुना में कूद पड़ते

है तब भी यशोदा की व्याकुलता देखने योग्य है । यहॉ वियोग, वाल्सलय विस्तृत नही तदापि उसकी मार्मिकता में कोई कमी नही है । इससे करूण वियोग वात्सलय में कवि ने अभिव्यक्ति दी है ।

वियोग वात्सलय का द्वारा अवसर कृष्ण के मथुरा गमन के समय आता है जो यशोदा कृष्ण को दूर भी खेलने नही जाने देती थी वे आप अपने ध्यान मगन को मथुरा जाता हुआ देख रही है । जहॉ कृष्ण के जीवन के लिए अनेक संकट है । आतुर कृष्ण और बालक को लेने आ गये और अब कृष्ण को नहीं रोका जा सकता। कृष्ण से मथुरा चले जाने पर माता का हदय वात्सलय से ओत–प्रोत होकर विकल होने लगता है । तो देवकी के पास सन्देश भेजती है ।

''देवकी सो कहियो ।

हो तौ धाय तिहारे सुत की कृपा करति ही रहियौ ।''

सूरदास वात्सलय रस के सम्राट है । उन्होंने न केवल बाल लीला का ही चित्रण नही किया , अपितु बालकों की मानसिक प्रकृति का भी हदयग्राहों आकर्षक वर्णन किया है। निश्चय ही सूरदास का वात्सलय वर्णन हिन्दी साहित्य की अपूर्वविधि है । जिसपर हम गर्व कर सकते है । उनकी समता करने वाला संस्कृत, अपभ्रंश और उनमे पूर्व का तथा बाद का हिन्दी कोई भी नही है वे वात्सलय रस के सम्राट है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सूरदास – द्रपेश्वर शर्मा, मोहन नुक ट्रस्ट इन्डिया नई दिल्ली ।
2. सूरदास और अन्य साहित्य – डायमंड ट्रन्स द्वारा ।
3. सूरदास सटीक – डॉ0 देवेन्द्र आर्य, डॉ0 सुरेश अग्रवाल ।
4. सूरदास और उनम भ्रमरगीत – दामोदर दास गुप्त, हिन्दी साहित्य संसार, पटना।
5. भारत दर्शन – हिन्दी साहित्यक पत्रिका ।
6. हिन्दी सात्यिक का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा

Copyright © 2017, Jyoti Kumari. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.